CBSE Test Paper 02

Ch-7 साखियाँ एवं सबद

1. **निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए-**

   मानसरोवर सुभर जल, हंसा केलि कराहिं।
   मुकताफल मुकता चुगैं, अब उड़ि अनत न जाहिं।।

   i. 'मानसरोवर' का प्रतीकार्थ बताते हुए इसकी विशेषताएँ लिखिए।
   ii. हंस क्या कर रहे हैं? वे अन्यत्र क्यों नहीं जाना चाहते हैं?
   iii. 'सुभर जल' तथा 'हंस' का गहन अर्थ बताइए।

2. किसी भी व्यक्ति की पहचान उसके कुल से होती है या उसके कर्मों से? साखियाँ एवं सबद के आधार पर तर्क सहित उत्तर दीजिए।

3. 'हिंदू मूआ राम कहि, मुसलमान खुदाई' कहकर कबीर ने उपासना पद्धति पर किस प्रकार व्यंग्य किया है?

4. तीसरे दोहे में कवि कबीर ने किस प्रकार के ज्ञान को महत्त्व दिया है?

5. कबीर ने ईश्वर को 'सब स्वाँसों की स्वाँस में' क्यों कहा है?

6. कबीर के अनुसार इस संसार में सच्चा संत कौन कहलाता है?

CBSE Test Paper 02

Ch-7 साखियाँ एवं सबद

Answer

1. i. मानसरोवर का प्रतीकार्थ है-मनुष्य का मन रूपी सरोवर जो ईश्वर भक्ति के स्वच्छ विचार रुपी जल से पूरी तरह भरा हुआ है । इसकी विशेषता यह है कि इस पावन जल से आकर्षित हो हंस (जीवात्मा) उसमें रह रहे हैं और इस आनंददायक स्थान को छोड़कर वे अन्यत्र जाना नहीं चाहते।
   ii. हंस मानसरोवर के लबालब भरे स्वच्छ जल में क्रीड़ारत होकर मोतियों को चुग रहे हैं। वे मानसरोवर छोड़कर अन्यत्र इसलिए नहीं जाना चाहते हैं क्योंकि ये मोती मानसरोवर के अलावा कहीं नहीं मिलने वाले हैं।
   iii. सुभर जल - 'प्रभु भक्ति एवं आनंद का' तथा हंस - 'जीवात्मा' का प्रतीक है।

2. अच्छे कुल में जन्म लेने मात्र से ही व्यक्ति महान नहीं बन जाता। व्यक्ति की महानता उसके कर्मों पर निर्भर करती है। किसी भी व्यक्ति की पहचान उसके अच्छे कर्मों से होती है । ऊँचे कुल में जन्म लेकर भी व्यक्ति यदि अच्छे कर्म नहीं करता है तो वह सम्मानीय नहीं हो सकता है। इसके विपरीत छोटे या निम्न कुल में भी जन्म लेकर व्यक्ति अपने अच्छे कर्म से समाज मे सम्माननीय बन जाता है।

3. उक्त पंक्ति के माध्यम से कवि ने हिंदू और मुसलमानों की उपासना पद्धति पर यह व्यंग्य किया है कि हिंदू आजीवन राम-राम जपते हुए तथा मुसलमान खुदा-खुदा कहते हुए चल बसते हैं। राम-रहीम के चक्कर में पड़कर वे धार्मिक रूप से कट्टर हो जातेहैं | अपने ईश्वर को दूसरे से श्रेष्ठ बताने के चक्कर में वे दूसरे की निंदा करने लगते हैं और स्वयं कुछ नहीं कर पाते |

4. तीसरे दोहे में कवि ने सांप्रदायिकता एवं भेदभाव रहित सच्चे ज्ञान की प्राप्ति को महत्त्व दिया है। सांसारिकता में फँसकर मनुष्य सच्चे ज्ञान से अनभिज्ञ रहता है। उसे खोजने और पाने के स्थान पर वह अपना समय व्यर्थ की वस्तुओं को खोजने में नष्ट कर देता है।

5. कवि ने ईश्वर को 'सब स्वाँसों की स्वाँस में' इसलिए कहा है क्योंकि सभी प्राणियों की रचना ईश्वर ने की है | प्रत्येक मनुष्य के अंदर स्थित आत्मा ईश्वर का ही अंश है | जीव का अस्तित्व उसी आत्मा के कारण संभव है |

6. इस संसार में सच्चा संत वही कहलाता है जो-

   i. सांसारिक मोहमाया और लोभ-लालच से दूर रहकर प्रभु की सच्ची भक्ति करता है।
   ii. सुख-दुख, लाभ-हानि, ऊँच-नीच, अच्छा-बुरा आदि को समान रूप से अपनाता है।
   iii. दिखावे की भक्ति नहीं करते हुए सच्ची भक्ति से प्रभु को प्राप्त करना चाहता है।
   iv. मनुष्य-मनुष्य में भेदभाव नही करता।